श्रीगुरुमाई के वचन

१. श्रीगुरुमाई के वचन।

***

२. सुबह का प्रकाश, हृदय का आह्लाद, गाओ अपनी पूरी शक्ति के साथ।

***

३. जहाँ भी तुम देखो, भगवान के ऐश्वर्य को पाओ।

***

४. अभिलाषा करो, मज़ा लेते हुए करो।

***

५. बारिश हो या धूप, उस क्षण में बने रहो।

***

६. हृदय-पथ का अनुसरण करो।

***

७. कृपा का आवाहन करो और अन्तर से मार्गदर्शन प्राप्त करो।

***

८. प्रेम को प्रेम दो।

***

९. प्रकृति के सौन्दर्य को स्पर्श करो।

***

१०. पावन भूमि का समादर करो।

***

११. स्थिर रहो। भारहीन रहो। प्रकाश बनो।

***

१२. मेरे साथ आओ।

***

१३. ग्रहणशील बनो।

***

१४. बोध के साथ चलो।

***

१५. मृदुल बनो। विनम्र बनो। मज़बूत बनो।

***

१६. आनन्द लो।

***

१७. भगवान के आलिंगन में लिपटे रहो।

***

१८. मधुरता का उत्सव मनाओ।

***

१९. विश्वास

***

२०. स्वाध्याय सुधा

***

२१. मैं तुम्हें सुन रही हूँ।

***

२२. अपने हृदय को नृत्य करने दो।

***

२३. क्या तुम अब भी यहाँ हो?

***

सद्गुरुनाथ महाराज की जय!

© २०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।